अखण्ड महापीठ प्रतिष्ठा

अखण्ड महापीठ का मठ एवं महामुनि श्रीश्रीबाबाजी महाराज का मन्दिर श्रीश्रीमाँ का स्वप्नादिष्ट मन्दिर है। सन् १९८६ ई. में एक बार रात्रि के दिव्य क्षणों में श्रीश्रीमाँ ने स्वप्न में श्रीश्रीबाबाजी महाराज का दर्शन पाया। उस वक्त महामुनिजी ने श्रीश्रीमाँ को अखण्ड महापीठ के वर्तमान निर्माणधीन मन्दिर का दर्शन करवाया था। श्रीश्रीमाँ ने महामुनिजी से कहा, ''मैं तो इस बार रानी होकर नहीं आयी हूँ, मैं मन्दिर कैसे बनाऊंगी? मेरे पास अर्थ एवं क्षमता कहाँ है?'' यह बात सुनकर महामुनिजी ने कहा था, ''तुम्हारे पीछे समग्र महात्मा-मंडल की शुभशक्ति है, तुम चिन्ता मत करो। तुम सिर्फ अपने तपोलब्ध आसन पर आसीन रहो, इससे ही सारे कर्म सम्पन्न हो जाऐंगे।'' तत्पश्चात् हम सब के परमपुज्यपाद श्रीश्रीबाबा के निर्देशानुसार श्रीश्रीमाँ की अमेरिका-यात्रा स्थगित हो गई। सन् १९८६ ई. में अखण्ड महापीठ का अस्तित्व नहीं था। सन् १९८८ ई. में श्रीश्रीमाँ ने अपने पितृगृह का परित्याग कर सॉल्टलेक में एक गृह में अवस्थान किया। दूसरे ही वर्ष श्रीश्रीमाँ ने पुन: सॉल्टलेक से अपने निवास स्थल का परिवर्तन कर पर्णश्री में आश्रय लेकर पर्णश्री को अपने चरणकमलों से पुण्य भूमि बना दिया।

गुरु मन्दिर में निर्माणधीन गुरुमहाराजाओं का सिंहासन

तदुपरान्त सुदीर्घ दस वर्षों तक पर्णश्री में ही श्रीश्रीमाँ ने एकासन पर व्यतीत किए। पर्णश्री में आने के पश्चात अल्पकाल में ही श्रीश्रीबाबा की इच्छानुसार महामुनिजी के आश्रम को प्रतिष्ठित करने के लिए श्रीश्रीमाँ ने अखण्ड महापीठ की जमीन खरीद ली। यह जमीन खरीदते समय श्रीश्रीमाँ के पास कुछ भी अर्थ न रहने की वजह से उनको अपने विवाह के स्वर्णालंकारों को विक्रय करना पड़ा। परवर्ती काल में सन् १९९६ ई. में जब ''माता सर्वाणी ट्रस्ट'' का गठन हुआ तब मठ का नामकरण क्या होगा इस विषय में श्रीश्रीमाँ की भावना थी कि वे मठ का शुभ नाम ''अद्वैत योगधाम'' निर्वाचित करें। किन्तु नामकरण करने की पूर्व रात्रि में ही साधना के समय कैवल्यनाथ श्रीश्रीरामठाकुर महाशय श्रीश्रीमाँ के निकट आविर्भूत होकर कहते हैं ''तुम समग्र विश्व का कल्याण करने आई हो। अत: विश्व के कल्याण मंच पर सिर्फ अद्वैतवाद ही नहीं द्वैताद्वैत वाद का भी समन्वय होगा। वेदान्त व तंत्र के समन्वय से वह स्थल 'अखण्ड महापीठ' नाम से अभिहित होगा।'' श्रीश्रीमाँ को अतीन्द्रिय दर्शन होते समय वहाँ महामुनिजी व श्रीश्रीबाबा का भी आगमन हुआ। उन्होंने भी ''अखण्ड महापीठ'' नाम का ही अनुमोदन किया। इस घटना के पश्चात् श्रीश्रीमाँ ने श्रीश्रीनंगाबाबा से भी अनुमति ली थी। दूसरे दिन श्रीश्रीमाँ ने हम सबके समक्ष घोषणा की कि मठ का नाम परिवर्तित होकर ''अखण्ड महापीठ'' हो गया है। इस प्रकार मठ का नाम ''अखण्ड महापीठ'' दिया जाएगा ऐसा सुनिश्चित हुआ।

अखण्ड महापीठ में श्रीश्रीगुरु महाराजगणों के चार श्रीविग्रह प्रतिष्ठित है। सर्वप्रथम श्रीश्रीमाँ ने महामुनि श्रीश्रीबाबाजी महाराज के श्री विग्रह का निर्माण करवाया। विग्रह का अभिषेक एवं प्रतिष्ठा व पूजादि श्रीश्रीबाबा ने स्वयं किया था। तत्पश्चात् श्रीश्री श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय एवम् परम गुरु महाराज श्रीश्रीनांगाबाबा (व्यास पीठस्थ) के विग्रह की प्रतिष्ठा श्रीश्रीमाँ ने स्वयं की। अवशेष में सन् २००५ ई. में पूज्यपाद श्रीश्रीबाबा का स्वर्गवास होने के पश्चात् श्रीश्रीमाँ ने श्रीश्री सरोज बाबा के विग्रह की भी प्रतिष्ठा-पूजादि की।

श्रीश्री सरोज बाबा मूलत: हिमालय व्यासपीठ के हठ्योगसिद्ध एवम् एक प्राचीन विराट महात्मा श्रीश्रीनांगाबाबा के अतिप्रिय पूर्ण परमहंस अवस्था प्राप्त शिष्य थे। हिन्दु सनातन धर्म व सत्य प्रतिष्ठार्थ महामुनि श्रीश्री बाबाजी महाराज ने क्रियायोग सम्प्रदाय की तमसाच्छन्न परिवेश को प्रकाशित करने के लिए श्रीश्री नांगाबाबा से श्रीश्री सरोजबाबा को सविनय मांग लिया था ताकि श्रीश्री लाहिड़ी महाशय की ब्रह्मविद्यारूप क्रियायोग साधना की धारा चिन्मय होकर लोक समाज में संरक्षित रहे। यही कारण था कि श्रीश्रीनांगाबाबा ने श्री सरोज बाबा को आदेश दिया कि वे महामुनिजी के जगत्-कल्याण कर्म में नियुक्त हो जाऐं। उन्हीं दिनों में हावड़ा जिले के शिवपुर नामक स्थल में क्रिया-योग की शृंखला से जुड़े एक गृहस्थ सन्यासी त्रिकालज्ञ ऋषि महापुरुष निवास करते थे। वे ही श्रीश्रीनिताइचरण बन्दोपाध्याय महाशय थे। महामुनिजी के क्रियायोग की सुललित पन्था को ज्ञात करने के लिए व्यासपीठ के श्रीश्री नांगाबाबा ने श्रीसरोज बाबा को शिवपुर में श्री निताइबाबा के पास जाने के लिए प्रेरित किया था। श्रीश्रीबाबा के जीवनवृत्तान्त स्वरूप ग्रंथ ''प्रज्ञान सरोज'' में इस विषय का विस्तृत रूप से उल्लेख किया गया है। परवर्ती काल में श्रीसरोज बाबा ने अनेक नरनारियों को क्रियायोग दीक्षा प्रदान की थी। श्रीश्रीबाबा एवं श्रीश्रीमाँ द्वारा प्रतिष्ठित इन चारों श्री विग्रहों को वर्तमान में अखंड महापीठ के स्वप्नादिष्ट नवनिर्मित मंदिर में पुन: प्रतिष्ठित किया गया है।

—मातृचरणाश्रित श्रीअर्णव सरकार
(हिन्दी अनुवाद : श्रीमोहित शुक्ल)